ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 343-344

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

बोधि–वृक्ष थे– ''डॉ0 कमलाकर पाण्डेय''

डॉ0 सुधा राय Email : sudhaashokrai@gmail.com

Received- 28.11.2020, Revised- 01.12.2020, Accepted - 04.12.2020

सारांश– ***मनुष्य इस संसार में श्रेश्ठ रचना है। मानव योनि समस्त योनियों में उत्तम है। गोस्वामी तुलसी बाबा ने मनुष्य योनि को स्वर्ग–लोक के देवों के लिये भी दुर्लभ बताते हुये 'रामचरित मानस' में लिखा है–***

' 'बड़े भाग मानुष तनु पावा। सुर दुर्लभ सद ग्रंथन्हि गावा।।''

आखिर इस देह में ऐसी क्या विशिष्टता है? ऋषियों–मुनियों ने आर्य–ग्रन्थों में इसकी महिमा का बखान किया है– ''तोते की नाक की तुलना, मनुष्य की नाक से की गयी, किसी तोते से नही कहा गया तुम्हारी नाक मनुष्य जैसी, कोयल की तरह मीठी–वाणी, वफादारी कुत्ते जैसी, इत्यादि उपमा हमेष्व श्रेष्ठ से ही दी जाती है, यहाँ सारी पशु–पक्षी, पत्थर से अटी पड़ी है। इसका उत्तर हमें वेदों से मिलता है, इसकी कीमत स्थूल देह की नहीं परन्तु इस देह में विराजमान परम ज्योति की है, जो संसार के लिये परम–कल्याण कारक है।

कुंजीभूत शब्द– शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या ।

एसो0 प्रो0–अध्यक्ष : हिन्दी–विभाग रा0 मो0 गर्ल्स पी0 जी0 कॉलेज अयोध्या, फैजाबाद (उ0प्र0), भारत

अनुरूपी लेखक

जिसके बारे में लिख रही हूँ उनका परिचय आवश्यक है– जन्म 1 जनवरी 1944, ग्राम बहुता, जिला बलिया, उत्तर प्रदेश, माता–स्व0 श्रीमती श्यामतुली पाण्डेय 'शान्ति' पिता श्री दत्तात्रेय पाण्डेय पत्नी श्रीमती भोला पाण्डेय जिनकी तुलना किसी भी उदार सहृदया स्त्री से ही की जा सकती है, और कोई नहीं ठहर सकता, आज भी, सभी बच्चों, शोधार्थियों को आत्मज/आत्मजा ही मानती हैं और गुरूदेव भी अपने रक्त से सम्बन्धित ही स्नेह करते थे।

शिक्षा– एम0ए0 (हिन्दी) सन् 1969 काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एम0ए0 (संस्कृत) सन् 1971, सागर विश्वविद्यालय सागर, मध्य–प्रदेश

पी0एच0डी0–सागर वि0वि0 सागर (सन् 1977) मध्य प्रदेश

वृत्ति– अध्यापन– 18 अगस्त, 1972 से जून 2006 सेवा निवृत्त स्नातक–परास्नातक, अध्यक्षः हिन्दी–विभाग का0सु0 साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अयोध्या, फैजाबाद, उ0प्र0 भारत

सम्प्रति– प्राचार्यः राजा रघुराज सिंह महावि0 मनकापुर–गोण्डा

विधा – निबन्ध, शोध–समीक्षा, कहानी, एकांकी, हिन्दी–कविता, भोजपुरी–गीत पुस्तक– उत्तरायण–परिशीलन (समीक्षा) सुमित्रानन्दन पंत का काव्य–बिम्ब (प्रकाशित शोध प्रबन्ध) कसिका (भोजपुरी गीत) जो दिखाः लिखा (कविता संग्रह) अनगिनत–निबन्ध, समीक्षा, एकांकी प्रकाशित

सामाजिक सांस्कृतिक कार्य–

अध्यक्षः (1) बौद्ध अध्ययन केन्द्र, अयोध्या भारत (2) अध्यक्षः जन जागृति मंच अयोध्या (3) सदस्य : तुलसी साहित्य मण्डल अयोध्या सदस्य/निदेशक (4) सदस्य : कार्य–कारिणी तथा पूर्व कुलपति– निःशुल्क गुरूकुल अयोध्या। स्थायी पता– 4 – 5 – 102 सत्यदेव–सदन प्रो0 कालोनी, रेलवे स्टेशन गेट, अयोध्या, जिला–फैजाबाद (अयोध्या) उ0प्र0, भारत 18 अप्रैल 2007 का दुर्दिन, अवध स्तब्ध था, नगरवासी आवाक! कैसे यह हो गया? डॉ0 कमलाकर पाण्डेय जी का निधन (बहुत जुड़ने के बाद सभी शोधार्थी (पी–एच0डी0) माता–पिता जी और मैं चाचा–चाची कहने लगी) जिसने भी देखा जाना पहचाना, स्वस्थ–शरीर, सरल दृष्टि, मधुर–मुस्कान, सहज–आत्मीय, सहयोगी भाव, अधीती विद्वान् ऋषि दृष्टी के रूप में (पर क्रोध की ग्रन्थि बनी ही नही थी) इसके अलावा जितनी विशेषतायें हो सकती है, सब निहित थीं। हजारों लोग अचानक देखते–देखते एकत्रित हो गये– ''देवा हॉस्पिटल'' और हृदय गति चार घण्टे में ली गयी..... सब करूण–क्रन्दन करने लगे, अबाल–वृद्ध–नर–नारी बच्चे तक का रूदन फूट पड़ा मानो प्राकृति भी हा–हा कार करने लगी और श्मशान घाट अयोध्या की भीड़ आज भी आँखो के सामने है। अचानक होना चाची जी के लिये मानो ''हाथ से तोते उड़ जाना'' हो गया वज्र का पहाड़ टूट पड़ा। धर्म पत्नी श्रीमती भोला देवी (माता तुल्य) 'यथा नाम तथा गुण' निःसन्देह देवी और देवता को संयोग रहा। सन् 1979 से अब–तक का सन्निध्य का निकष– 'देवताओ में भी ईर्ष्या द्वेष, छल–छद्म हो सकता है, किन्तु ये दम्पति सभी विकारों से मुक्त, संस्कारों से युक्त। उनकी लिखी पुस्तक ''जो दिखा लिखा'' 'वह राह' कविता का अंश पठनीय है– तुम गायक हो तो अपना गाना शुरू करो वह राह कि जिस पर चलते विष्णु–दिगम्बर, वह राह कि जिससे बनते राम–कन्हाई। जिस पर चलकर

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

बना जाता नर अवतारी, पूजी जाती है मूर्ति मरण पर प्यारी।

जो स्वयं जागृत है, केवल वही दूसरों के जागरण में सहायक हो सकता है। स्वयं सोया हुआ भला औरों की किस तरह जगा पायेगा? सच भी यही है, कि जिसके भीतर स्वयं अन्धकार है, वह दूसरो के लिये प्रकाश का स्रोत नहीं हो सकता। दूसरों की सेवा तभी संभव है, जब हम स्वयं का सृजन प्रारंभ करें। लोक–निर्माण, आत्म–निर्माण के बिना असंभव। यदि आप अपरिचित हैं, तो 'लोक–सहचर' पुस्तक पढ़े। यदि परिचय पाना चाहते हैं, या परिचित होना चाहते हैं–तो जो 'दिखाः लिखाद्य' का यह अंश अवश्य पढ़े– ''कच्छप–कवच से मुंह निकाल कर बार–बार अपनी पहचान कराना मुझे नितान्त हास्यास्पद लगता है। बेचारे कितने तो इसी कवायद में हाल–बेहाल चले जाते हैं। कब्र में पैर गया, गर्दन उचकाये झाँक रहे हैं कोई मुझे पहचानता है कि नहीं .... सो इस ओर से तटस्थ रहूँगा। व्यक्ति की सम्पूर्णता का जन्म एक संयोग है, मृत्यु एक घटना के साथ जुड़ी है। जो साहित्यानुरागी भावक हैं, उन्हें डॉ0 पाण्डेय जी कि इन पुस्तकों का पढ़ने का अवसर अवश्य मिलेगा और मिलना चाहिये– खाँटी भोजपुरी पर कुछ पुस्तकें हमें पहचान बोलियों की कराती हैं।

1. कसिका (भोजपुरी–भजन–लोकगीत)
2. जो दिखाः लिखा
3. सुमित्रा नन्दन पंत का काव्य बिम्ब
4. बल्लिका (भोजपुरी बलिया पर)
5. मल्लिका (गोरखपुर की बोली अप्रकाशित)

उपर्युक्त पुस्तक हम सभी स्वाध्यायी जनों के लिये शब्द नहीं, शक्ति–प्रकाश एवं बोधि–सत्व की छाया है। हित–मित्र, पुरजन परिजन यही कहते मित्रों, ''मोरा हीरा हेरा गया'' जो छति होती है, उसकी पूर्ति का सिद्धान्त 'अर्थशास्त्र' बताता है इस क्षतिपूर्ति का होना असंभव है। हम सभी को गुरूमाता भोला देवी का स्नेह, वैसे ही मिलता रहेगा, हम सभी का दायित्व उनके प्रति कितना है ?

सोचें समझें ..... समझदार को इषारा पर्याप्त है। इसी श्रद्धांजलि के साथ 'बोधि–वृक्ष' को नमन!

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. लोक–सहचर – सम्पादक डॉ0 अनुराग मिश्र संस्करण 2010.
2. जो दिखाः लिखा – कमलाकर पाण्डेय – 2004 'प्रकाशन वर्ष'।
3. कसिका – भोजपुरी –भजन गीति – डॉ0 कमलाकर पाण्डेय 2003.
4. बल्लिका – डॉ0 कमलाकर पाण्डेय – 2006 प्रथम संस्करण।
5. परिवारिक –सहभाग – स्वयं।

*****